श्रीमती कमला बुटाणी,
ई-19, यू.आई.टी. कालोनी, नाका
मदार, अजमेर-305007
फोन-

सिन्धुदूत

राजस्थान सिन्धी अकाडमी का तिमाही बुलेटिन

1999 जुलाई 98 से मार्च 99 संयुक्तांक अंक 5



1



2



3



4

प्रधान सम्पादक
भगवान अटलाणी

सम्पादक (देवनागरी)
कन्हैया अगनाणी

सम्पादक (अरबी)
मोहन 'उदासी'

आओं देखें कैसे गुजरा *राजस्थान सिन्धी अकादमी* का द्वितीय वर्ष

जिस प्रकार केंद्र सरकार ने सिन्धी भाषा के संवर्द्धन और विकास के लिए एक स्वायत निकाय के रुप में राष्ट्रीय सिन्धी भाषा विकास परिषद् का गठन किया है और जिसके अध्यक्ष मानव संसाधन विकास मंत्री हैं। उसी प्रकार राजस्थान प्रदेशं में वर्ष १९७९ में राजस्थान सिन्धी अकादमी का गठन किया गया था, जिसके वर्तमान अध्यक्ष साहित्यकार भगवान अटलानी हैं। अप्रैल, १९९७ से लेकर मार्च १९९८ तक अध्यक्ष भगवान अटलानी के कार्यकाल में हुए कार्यो को आपने वक्त–दर–वक्त वर्ष १९९७–९८में अकादमी द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक सिन्धू दूत के अंकों तथा समाचार पत्रों व पत्रिकाओं में देखा होगा। आईये अब देखें अप्रैल १९९८ से मार्च १९९९ तक अकादमी द्वारा सिन्धी भाषा, संस्कृति, कला आदि के विकास के लिए किए गए कार्यो को, जिन्हें अब तक आपने संक्षेप में समाचार पत्र पत्रिकाओं आदि में ही पढ़ा होगा।

चैत्र–वैसाख १९९८

वित्त वर्ष के प्रारंभिक माह की १२ तारीख को अकादमी के कार्यालय में सदस्यों की साधारण सभा एवं कार्यकारिणी की बैठक रखी गई। इसी महीने की १६ तारीख को अकादमी कार्यालय में माहवारी लेखक गोष्ठी आयोजित करने के अलावा २३ तारीख को बीकानेर में भी लेखक गोष्ठी रखी गई थी। २७ अप्रैल को अजमेर में लेखक गोष्ठी रखने के अतिरिक्त २६ अप्रैल को सिन्धी अकादमी की ओर से साहित्यक पुस्तकों को पुरस्कार देने हेतु लेखकों से उनकी पुस्तकें आमंत्रित की गई ताकि चयन कर उम्दा पुस्तकों को पुरस्कार देकर नये साहित्यकारों को प्रेरित किया जा सके।

वैसाख–ज्येष्ठ १९९८

मई महीने की एक तारीख को नाटकों की प्रतियोगिता हेतु रचनाओं को आमंत्रित किया गया। चार मई को कहानियों की विधा में दखल रखने वाले कहानीकारों से कहानियां आमंत्रित की गई। १२ मई को पुस्तकों को छपवाने हेतु साहित्यकारों को आर्थिक सहयोग प्रदान करने के लिए पाण्डुलिपियां मंगवाई गई। १२ मई को ही ऐसे साहित्यकारों जिन पर 'सरस्वती' की तो कृपा रही है लेकिन 'लक्ष्मी उनसे नाराज़ है। यानि कि आर्थिक दृष्टि से कमजोर साहित्यकारों को आर्थिक सहयोग देने के लिए उनसे आवेदन पत्र मंगवाए गए। मई की १५ तारीख से जयपुर के मानसरोवर में सिन्धू संस्कृति प्रचार संस्था के सहयोग से सिन्धी भाषा की कक्षाएं आयोजित की गई। यही नहीं बल्कि १५ मई से ही सुधार सभा,अजमेर की सहायता से सिन्धी पढ़ाने हेतु कक्षाएं लगाई गई। अकादमी कार्यालय में १७ मई को जहां साहित्यिक गोष्ठी रखी गई तो वही २४ मई को गरीब नवाज़ की नगरी अजमेर में अकादमी की साधारण सभा की बैठक रखी गई। इसी २४ तारीख को अजमेर शहर के आदर्श डिग्री कालेज में अकादमी द्वारा सृजित समितियों के संयोजकों/ सहसंयोजकों एवं सदस्यों का विशाल सम्मेलन आयोजित किया गया। इसी माह की २६ तारीख को अजमेर में लेखक गोष्ठी आयोजित करने के अतिरिक्त मई माह की अंतिम तिथि यानी कि ३१ मई को कोटा नगर की संत कंवरराम धर्मशाला में महिलाओं का सम्मेलन रखा

गया था। आईए अब बढ़ते हैं जून महीने की ओर।

ज्येष्ठ– आषाढ.१६६८

जून महीने की पहली तारीख से गुलाबी नगर जयपुर की सिन्धी सैंट्रल एसोसिएशन जवाहर नगर के सहयोग से १५ दिवसीय सिन्धी भाषा का शिक्षण शिविर आयोजित किया गया। इसके उपरांत इसी महीने में जहां अजमेर में हरी सुन्दर बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में शिविर आयोजित कर बच्चों आदि को सिन्धी सिखाई गई, वहीं जोधपुर में भी सिन्धी सिखाने हेतु विशेष शिविर आयोजित कर सिन्धीभाषा लेखन के लिए लोगों को प्रशिक्षित किया गया। जून महीने की ६ से १४ तारीख तक भारतीय सिन्धू सभा की अजमेर शाखा के माध्यम से बच्चों को सिन्धी भाषा में प्रशिक्षण देने के अलावा ६ जून को ही भीलवाड़ा शहर के 'हरीशेवा धाम ' के सहयोग से सिन्धी सिखाने के लिए शिविर आयोजित किया गया, ताकि बच्चे गर्मियों की छुट्टियों में अपनी मातृभाषा को सीख सकें। जून माह की १६ तारीख को ''सिन्धू यूथ सोसाइटी'' कोटा के सहयोग से १५ दिवसीय शिविर लगााकर सिन्धी भाषा सीखने के लिए कक्षाएं लगाई गई । जून महीने की १६ तारीख को अकादमी द्वारा निकाली जा रही वार्षिक पत्रिका 'रिहाण' के लिए साहित्यकारों से रचनाएं आमंत्रित की गई। इस महीने की २१ तारीख को जोधपुर शहर के के० के० अभिचन्दानी मार्डन स्कूल में प्रदेश के सिन्धी विद्यालयों के प्रबन्धकों/ अध्यक्षों/ प्रधानाचार्यो एवं प्रधानाध्यापकों का राज्य स्तरीय सम्मेलन आयोजित किया गया। जून माह की २८ तारीख को गंगानगर की सिन्धी सैंट्रल पंचायत के सहयोग से गंगानगर शहर में राज्य स्तरीय ''सिन्धी पंचायतों''का सम्मेलन रखा गया। इस माह की अंतिम तारीख यानि कि ३० जून को बीकानेर शहर में साहित्यक गोष्ठी रखी गई। अब स्कूल खुल चुके हैं। बच्चे अपनी नियमत पढ़ाई के लिए पुस्तकें आदि खरीदने में ही व्यस्त ही नहीं, अपितु विद्यालयों में जाकर अपनी शैक्षणिक पढ़ाई में लिए मेहनत करने लग गए है। अब आइये माह जुलाई पर नज़र डालें।

आषाढ़– श्रावण १६६८

जुलाई माह की ६ तारीख को सिन्धी सैंट्रल एसोसिएशन जवाहर नगर जयपुर के सहयोग से सिन्धी सिखाने की कक्षाओं का समापन समारोह आयोजित किया गया। इसी माह की ८ तारीख को केंद्रीय हिन्दी निदेशालय आगरा संभाग के रीडर ड़ा० पीताम्बर ठाकवाणी का जयपुर स्थित अकादमी के कार्यालय में सम्मान किया गया। ६ जुलाई को जयपुर में ही मध्य प्रदेश सिन्धी साहित्य अकादमी के सचिव श्री साबू रीझवाणी का सत्कार किया गया। जुलाई माह की १८ तारीख को अकादमी की और से निकाली जा रही त्रैमासिक पत्रिका सिन्धुदूत के विशेषांक का प्रदेश के राज्यपाल नवरंगलाल टिबरेवाल द्वारा राजभवन में विमोचन किया गया। जुलाई १६ को राजस्थान की समस्त अकादमियों के अध्यक्षों / सचिवों की बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में राजस्थान की समस्त अकादमियों की ओर से वर्ष में कम से कम एक संयुक्त कार्यक्रम आयोजित करने तथा सिन्धी अकादमी की ओर से आयोजित ''सर्वभाषा कवि सम्मेलन '' के आयोजन पर चर्चा की गई। इसी माह की २१ तारीख को जहां कोटा में महिला समिति की बैठक रखी गई वहीं २५ जुलाई को अजमेर में साहित्यिक गोष्ठी आयोजित की गई। इसी माह की २६ तारीख को अकादमी के कार्यालय में इस बार सामी पुरस्कार विजेता राधाकृष्ण लालवाणी ''राही''

के "लेखक से मिलिये" कार्यक्रम रखा गया। जुलाई के अंतिम दिन यानी कि ३१ जुलाई को बीकानेर में साहित्यिक गोष्ठी रखी गई। अब हम बढ़ते हैं अगस्त माह की ओर।

श्रावण– भाद्र– १६६८

अगस्त महीने की ६ तारीख को जयपुर के साधू वासवानी उच्च माध्यमिक विद्यालय में अखिल राजस्थान अध्यापक सम्मेलन आयोजित किया गया। इसी तारीख को आठ सिन्धी शिक्षक/शिक्षिकाओं का सम्मान किया गया। इस अवसर पर " सिन्धी भाषा के प्रोत्साहन में शिक्षकों का योगदान" तथा " ऐसा क्या किया जाए जिससे सिन्धी भाषा पढ़ने वालों की संख्या बढ़ सके" विषयों पर गोष्ठी आयोजित की गई। अगस्त महीने की १४ तारीख को जयपुर, अजमेर,कोटा, उदयपुर, जोधपुर, बीकानेर, टौंक तथा ब्यावर में वाद–विवाद प्रतियोगिता रखी गई। १४ अगस्त को ही आज़ादी की स्वर्ण जयन्ती के समापन तथा सिन्ध स्मृति दिवस पर अलवर में "सर्वभाषा कवि सम्मेलन" आयोजित किया गया। इस कवि सम्मेलन में ग्यारह भाषाओं के सोलह कवियों ने अपनी रचनाएं पढ़ी। अगस्त माह की १६ तारीख को सिन्धी साहित्य समिति,बीकानेर के सहयोग से बीकानेर में सिन्धी लोक गीतों की प्रतियोगिता रखी गई। १६ तारीख को ही कोटा नगर में महिला समिति की गोष्ठी आयोजित की गई। अगस्त माह की २३ तारीख को सिन्धु युवा संघ, ब्यावर के सहयोग से ब्यावर नगर में महाराजा दाहिरसेन जयन्ती पर आयोजन रखा गया। इसी दिन जयपुर में कवि गोष्ठी रखी गई तथा २५ अगस्त को सिन्धूपति महाराजा दाहिरसेन के अजमेर स्थित स्मारक स्थल पर संगोष्ठी आयोजित की गई। अगस्त माह की २८ तारीख को अजमेर में साहित्यिक गोष्ठी रखने के अतिरिक्त ३० तारीख को उदयपुर स्थित झूलेलाल सेवा समिति की ओर से वाद–विवाद प्रतियोगिता का फाइनल राउन्ड आयोजित किया गया। अब चलते हैं माह सितम्बर की ओर।

भाद्र– आश्विन १६६८

सितम्बर माह की ६ तारीख को अकादमी कार्यालय जयपुर में "रिहाण" पत्रिका के संपादक मंडल की बैठक रखी गई, समाज सेवा में उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान करने के फलस्वरुप तथा १३ तारीख को अजमेर में साहित्यिक गोष्ठी रखने के अलावा श्रीमती संजना साजवानी का सम्मान किया गया। सितम्बर माह की १६ तारीख को अकादमी की "मेहमानों का स्वागत" समिति द्वारा अजमेर शहर में मुम्बई से आए साहित्यकार डा० नारायण भारती, हरि मोटवाणी एवं अजमेर के डा० बद्रीप्रसाद पंचोली का समान किया गया। इसी माह की १६ तारीख को राज्य स्तर पर "अधूरी कहानी पूरी करो" प्रतियोगिता अजमेर, जयपुर, कोटा, बीकानेर, उदयपुर, जोधपुर, किशनगढ, ब्यावर तथा खैरथल में आयोजित की गई जिसमें लगभग ५,००० प्रतियोगियों ने भाग लिया। सितम्बर माह की १८ तारीख को उदयपुर में लेखक गोष्ठी रखने के अतिरिक्त २२ सितम्बर को राजस्थान के जयपुर, अजमेर, कोटा,टौंक,ब्यावर,अलवर, बालौतरा,किशनगढ में अकादमी के आर्थिक सहयोग से "असू चंड" पर बहराणें साहिब की झाकियां निकाली गई। सितम्बर माह की २४ तारीख को कोटा मे महिला समिति की बैठक रखी गई। इसी महीने की २६ तारीख को अजमेर,कोटा,उदयपुर,बीकानेर, टौंक,ब्यावर,अलवर,किशनगढ़ पदमपुर एवं खैरथल में राज्य स्तरीय पेंटिंग प्रतियोगिता रखी गई। इस प्रतियोगिता में कुल मिलाकर १६,००० प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसी प्रकार अकादमी द्वारा २७ सितम्बर

को जयपुर में साहित्यिक गोष्ठी रखी गई। आइए अब चलते हैं माह अक्टूबर की झलक देखने।

अश्विन–कार्तिक १६६८

अक्टूबर महीने की ४ तारीख को जोधपुर में राज्य स्तरीय पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसी महीने की ५ तारीख से ११ तारीख तक बीकानेर में नये कलाकारों की सात दिवसीय नाटक कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में प्रदेश की २८ समितियों ने भाग लिया। बीकानेर में १० अक्टूबर से आयोजित राज्य स्तरीय सिन्धी एकांकी प्रतियोगिता के तहत पहले दिन पाँच और दूसरे दिन चार नाटकों का आयोजन किया गया। इसी महीने की १६ तारीख को सिन्धियत और सिन्धी साहित्य तथा सभ्यता से संबंधी रखने वाली पुस्तक ''सुवालनि जो_ज़खीरो'' का अजमेर में विमोचन किया गया। इस अनूठी पुस्तक का अलग–अलग तिथियों पर भीलवाड़ा,ब्यावर, जयपुर, बालौतरा, टौंक,उदयपुर,जोपुर एवं कोटा में भी विमोचन किया गया। अक्टूबर की २४ तारीख को''लेखक से मिलिये'' कार्यक्रम के तहत वरिष्ठ साहित्यकार गोविन्दराम हुक्मानी का अजमेर में सम्मान करने के साथ–साथ साक्षात्कार का भी आयोजन किया गया। इसी माह की २५ तारीख को जयपुर में साहित्यक संगोष्ठी के अलावा २६ अक्टूबर को अकादमी द्वारा प्रकाशित ''सुवालनि जो_ज़खीरो'' का अलवर शहर में विमोचन किया गया। इसी''तारीख को बीकानेर में भी इस पुस्तक का विमोचन किया गया। अब चलते हैं माह नवम्बर की ओर।

कार्तिक– अग्रहायण १६६८

नवम्बर माह के प्रारंभ में ही पहली तारीख को वयोवृद्ध साहित्यकार एवं समाजसेवी गोविन्दराम हुक्मानी के असामयिक निधन पर अकादमी कार्यालय में श्रद्धांजलि सभा रखी गई। इसी महीने की ५ तारीख को अजमेर की संत कंवरराम धर्मशाला में अकादमी की ओर से श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। नवम्बर की ८ तारीख से लेकर १५ तारीख तक जोधपुर में नये साहित्यकारों की ८ दिवसीय कार्यशाला में ३० से अधिक सहभागियों ने भाग लिया। नवम्बर माह की ६ तारीख को किशनगढ़ में ''सुवालनि जो_ज़खीरो'' पुस्तक का विमोचन किया गया। १२ नवम्बर को जयपुर में राजस्थान राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति इन्द्रसेन इसराणी ने ''सुवालनि जो_ज़खीरो'' का विमोचन किया। १४ नवम्बर को जोधपुर में दो दिवसीय लेखक सेमीनार आयोजित की गई। इस सम्मेलन मे १४ नवम्बर को ''स्वतंत्रता से पूर्व सिन्धी साहित्य'' एवं ''सिन्धी साहित्य के सम्मुख आज़ादी के बाद आई कठिनाइयां एवं उनके समाधान हेतु सुझाव'' विषय पर पत्रवाचन हुआ। इसी रात सिन्धी मुशायरे का आयोजन हुआ। लेखक सेमीनार के दूसरे दिन १५ नवम्बर को ''आज़ादी के पश्चात् जन्मे सिन्धी लेखकों की रजनाओं'' पर दृष्टिपात पर पत्रवाचन के अतिरिक्त ''राजस्थान सिन्धी अकादमी और सिन्धी साहित्य का विकास'' विषयक पर खुली चर्चा की गई। १४ नवम्बर को कोटा में सिन्धी साहित्यक गांष्ठी के आयोजन के अलावा १७ तारीख को किशनगढ़ में सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह आयोजन जयपुर,बीकानेर, खैरथल, टौंक और ब्यावर में भी रखी गई। सिन्ध और सिन्धियत से संबंधित इस प्रतियोगिता में ३५०० से अधिक बच्चों ने भाग लिया। २७ नवम्बबर को ही कोटा में महिला समिति की बैठक रखी गई। २६ नवम्बर को जयपुर स्थित अकादमी कार्यालय में मासिक लेखक गोष्ठी रखी गई। अब बढ़ते हैं माह दिसम्बर की ओर।

अग्रहायण– पौष. १९९८

दिसम्बर महीने की ६ तारीख को कोटा में राज्य स्तरीय सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसी दिन जोधपुर में तो ७ तारीख को अजमेर में सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता रखी गई। ७ तारीख को कोटा स्थित सिन्धू युवा मंडल समिति के सहयोग से "सिन्धी युवा महोत्सव" रखा गया, जिसमें अकादमी के अध्यक्ष भगवान अटलानी द्वारा विजेताओं को पुस्कृत किया गया। ७ तारीख से तेरह तारीख तक जयपुर के अलग अलग विद्यालयों में चित्रकला प्रतियोगिता रखी गई। इसी महीने की १६ तारीख को कोटा में महिला समिति की बैठक तथा २१ दिसम्बर को बीकानेर में मासिक साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन किया गया। दिसम्बर की २७ तारीख को जयपुर में लेखक गोष्ठी आयोजित की गई। बीकानेर में आयोजित एकांकी प्रतियोगिता की तीन श्रेष्ठ एकांकियों व ३१ दिसम्बर को कोटा में मंचन रखा गया। अब अंग्रेजी वर्षो का नया वर्ष प्रारम्भ हो चुका है नूतन वर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ आईयें चले जनवरी १९९९ की और ।

पौष–माघ १९९९

नववर्ष की चौखट की पहली सीढ़ी पर पांव रखते ही यानि कि १ जनवरी को उदयपुर में प्रतियोगिता के तीन श्रेष्ठ नाटकों को प्रदर्शित किया गया। इसी प्रकार २ जनवरी को जयपुर के जवाहर कला केंद्र में भी तीन सिन्धी नाटकों का मंचन किया गया। इसी माह की १३ जनवरी को अकादमी के नए सचिव हासानंद जेठानी ने कार्यभार संभाला। जनवरी की २१ तारीख को प्रदेश के जयपुर, अजमेर, बीकानेर, जोधपुर, कोटा, टौंक,पदमपुर, भीलवाड़, बालौतरा, किशनगढ़, अलवर एवं सलूम्बर में अमर शहीद हेमू कालाणी के शहीदी दिवस पर युवा रैलियां निकाली गई एवं गोष्ठियां आयोजित की गई। इस अवसर पर अकादमी की ओर से हेमू कालाणी पर प्रकाशित फ़ोल्डर का विमोचन भी किया गया। जनवरी की २४ तारीख को अकादमी कार्यालय में लेखक गोष्ठी रखने के अलावा अजमेर एवं बीकानेर में भी साहित्यिक गोष्ठियां आयोजित की गई। जनवरी माह की २६ तारीख को अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता के परिणाम घोषित किए गये तथा ३० जनवरी को अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता के परिणाम घोषित किए गए तथा ३० जनवरी को अखिल भारतीय एवं राज्य स्तरीय एकार्की आलेख प्रतियोगिताओं के नतीजों को घोषित किया गया। अब चलिए नववर्ष के दूसरे महीने यानि कि फरवरी की ओर।

माघ – फाल्गुन–१९९९

फरवरी महीने की चौथी तारीख को अकादमी की ओर से दिए जाने वाले साहित्य के पुरस्कारों की घोषणा की गई तथा ७ फरवरी को अकादमी के मार्च माह में आयोजित होने वाले वार्षिकोत्सव हेतु जयपुर में बैठक आयोजित की गई। इसी माह की २१ फरवरी को जोधपुर में साघू टी० एल० वासवाणी व्याख्यान माला के तहत "सिन्धी समाज और जाति प्रथा" विषय पर व्याख्यान माला के द्वितीय पुष्प में डा० राम आहूजा ने अपने विचार प्रस्तुत किया। फरवरी माह की २५ तारीख को "मेहमानों का स्वागत" समिति की ओर से पुणे के जीवत केसवाणी सात असिन्धी भाषी सिन्धी सीखने वाले अध्यापकों का सम्मान किया गया। इस माह की अंतिम तिथि २८ फरवरी को अकादमी कार्यालय में साहित्यिक गोष्ठी रखी गई। फरवरी में ही अलग अलग तिथियों पर अजमेर तथा बीकानेर में भी लेखक गोष्ठी आयोजित की गई। फरवरी माह में पाण्डुलिपि प्रकाशन सहयोग योजना के तहत आठ

साहित्यकारों को आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया। इसी माह में आर्थिक दृष्टि से कमजोर लेखकों को भी आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया। फरवरी में ही राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मण्डल की ओर से पाठ्यक्रम हेतु दी गई पुस्तकों का अनुवाद कराके उन्हें सौंपा गया। अब चलते हैं वित्तीय वर्ष के अंतिम माह मार्च की चौखट पर।

चैत्र शाके–१६६६

माह मार्च की १३ तारीख से लेकर १५ तारीख तक अखिल भारत सिन्धी बोली व साहित्य प्रचार सभा,उल्हासनगर की ओर से हरिद्वार में आयोजित संगोष्ठी में राजस्थान का प्रतिनिधित्व करने हेतु तीन साहित्यकारों क्रमशः सलामतराय गुरबाणी, जयपुर डा० सुशीला मोटवाणी,अजमेर एवं सुरेश बाबलाणी, अजमेर को हरिद्वार भेजा गया। १६ मार्च को चेटीचंड के अवसर पर जयपुर में अकादमी की ओर से झांकी निकाली गई। जयपुर ,अजमेर,कोटा, बीकानेर, अलवर, भीलवाड़ा व पदमपुर में अकादमी की ओर के राष्ट्रीय एकता व चेटीचंड विषय पर विचार गोष्ठियों का आयोजन किया गया। २१ मार्च को भगवान अटलाणी ने अध्यक्षीय कार्यकाल का दूसरा वार्षिकोत्सव जयपुर के रवीन्द्र मंच पर बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। दो भागों में विभाजित इस वार्षिकोत्सव के पहले भाग में सिन्धी अकादमी द्वारा गठित समितियों के संयोजकों ने रिपोर्ट पढ़कर अपने शहर में किए कार्यो की जानकारी दी। इसी भाग में राजस्थान के राज्यपाल श्री अंशुमानसिंह द्वारा प्रदर्शनी का उद्घाटन के साथ एकांकी, अधूरी कहानी, सामान्य ज्ञान तथा चित्रकला प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। उन्होंने देश में पहली बार राजस्थान समाचार पत्रों व पत्रिकाओं के सम्पादकों को सम्मानित किया।

अकादमी के वार्षिकोत्सव के दूसरे भाग में ईश्वर चंदर पुरस्कार ही विजेता स्वर्गीय गोविन्द हुकमानी, नारायण श्याम पुरस्कार के विजेता मोहन उदासी, तीरथ सभाणी पुरस्कार की विजेता कमला गोकलानी को पुरस्कार प्रदान किया गया। इस मौके पर नानकराम ईसराणी की पुस्तक'' भूमीअ जी खोज'' के अलावा सिन्धी अकादमी की वार्षिक पत्रिका ''रिहाण'' का विमोचन किया गया। अकादमी के इस वार्षिकोत्सव के अवसर पर जोधपुर की सिन्ध ी कल्चर की सोसाइटी की ओर से प्रस्तुत बीकानेर में आयोजित एकांकी '' बाबीअ जी आखाणी'' को प्रदर्शित किया गया। इस समारोह में विश्वप्रसिद्ध आध्यात्मिक संस्था प्रजापति ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की प्रमुख प्रशासिका दादी प्रकाशमणी को ''सिन्धू रत्न'' की उपाधि से सम्मानित किया गया। वार्षिकोत्सव को राजस्थान के शिक्षा मंत्री डा० बी० डी० कल्ला, राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति शिवकुमार शर्मा, पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति इन्द्रसेन इसराणी, प्रवासी भारतीय श्री दीप मीरानी तथा प्रेम प्रकाश आश्रम में स्वामी हरिदासराम जी ने सुशोभित किया। वार्षिकोत्सव के पहले भाग का संचालक जोधपुर के हरीश देवनाणी व दूसरे भाग का संचालन कोटा के किशन रतनाणी ने किया। भगवान अटलाणी के कार्यकाल में पहले वर्ष १६६७–६८ में ११६ कार्यक्रम आयोजित किये गये थे। लेकिन वर्ष १६६८–६६ में २०० कार्यक्रम आयोजित किए गए है। विचारनीय है कि आखिर किस तरह कितनी मेहनत, कितने तालमेल परिणामस्वरूप यह संभव हो सका है कि पूरे राज्य का सिन्धी समुदाय अकादमी से जुड़ गया है।

سنڌو دوت

راجستان سنڌي اڪادمي جو ٽماهي بليٽن

١٩٩٩ جولاءِ ١٩٩٨ - مارچ ١٩٩٩ انڪ ٢-٣


1


2


3


4

پرڌان سمپادڪ

پگوان اٽلاڻي

سمپادڪ (عربي)

موهن 'اُداسي'

سمپادڪ (ديوناگري)

ڪنهيا اگناڻي